बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की प्रमुख कृतियों में सामाजिक द्रश्य।

डॉ. संजीव कुमार गौतम

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (सम विश्वविद्यालय) लेह, केंद्र शसित प्रदेश लद्दाख

ABSTRACT

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपने गंभीर शोध के आधार पर हिन्दुओं के इन धर्मशास्त्रों के संबध में उल्लेख करते हैं कि इन धर्मशास्त्रों में दिये विवरण पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं किया जा सकता और इसके दो कारण है प्रथम – मैं एक सच्चा इतिहासकार की परंपरा का अनुशरण नहीं करता हूँ जो सभी साहित्य को औचित्यहीन की श्रेणी में रखता है क्योंकि जो साहित्य में विवरण होता है वह इतिहास लेखन के मापदण्डों के बिल्कुल उलट होता है दूसरा – धर्मशास्त्रों के प्रति सम्मान व श्रद्धा किसी के आदेश से नहीं दिखायी जा सकती, यह केवल सामाजिक कारकों के प्रति भावनात्मक लगाव के कारण ही हो सकती है। तथाकथित उच्चवर्णीय हिन्दुओं की इन धर्मशास्त्रों के प्रति जो सम्मान व श्रद्धा है, उसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दुओं के यह धर्मशास्त्र ब्राह्मणों को प्रत्येक दशा में सर्वोच्च स्थान प्रदान करते हैं, जबकि गैर ब्राह्मण (विशेषकर शूद्र वर्ण के लोगों) की प्रगति में हिन्दुओं के ये धर्मशास्त्र एक बड़े अवरोध के रूप में ही कार्य करते हैं। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक में लिखते हैं कि हिन्दू समाज की जाति व्यवस्था एक मात्र धारणा है, जो सदियों से भारतीय समाज में प्रमुख के रूप अपना अस्तित्व बनाये हुये है इसलिए बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने महात्मा गाँधी से बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा था कि हिन्दू समाज की मानवीय आधार पुर्नसंरचना करनी ही चाहिए, जिसमें स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्व (भाईचारा की भावना) के सिद्धांत मौजूद रहे।

KEYWORDS: धर्मशास्त्र, उच्चवर्णीय, सीढ़ीबद्ध, कपोल कल्पित धारणा, रुढ़िवादी, संकुचित, इण्डो–आर्यन, कटटरपंथी, संक्रमित, पूर्वजन्म, वाल्टेयर।

प्रस्तावना

इस शोध पत्र के माध्यम से बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की उन प्रमुख कृतियों (पुस्तकों) की समीक्षा की गयी है, जिनमें भारत देश की पुरातनवादी सामाजिक व्यवस्था के कुछ मूलभूत पहलुओं को बड़े ही प्रभावपूर्ण ढ़ग से समाहित है। यह भारतीय सामाजिक व्यवस्था के वह पहेलू हैं, जिन्हें बड़े से बड़े धर्मात्मा, समाज सुधारक और तथाकथित उच्चवर्णीय विद्वान लिखने से हमेशा डरते रहे और इन सबके डरने का मुख्य कारण यह था कि यह सभी भारतीय समाज (विशेषकर हिन्दू समाज) की पुरातनवादी व्यवस्था के कट्टर पोषक थे और यह वही पुरातनवादी व्यवस्था थी, जिसने मानव को कभी मानव नहीं समझा, जबकि हकीकत यही है कि भारतीय समाज की इस पुरातनवादी व्यवस्था से हमारे गौरवशाली देश की प्रतिष्ठा को अपूर्णनीय हानि ही हुयी तथा इसलिए कई बार तो देश की एकता, अखण्डता और स्वतंत्रता भी गवानी पड़ी थी। यह बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ही थे, जिन्होंने भारत देश की एकता, अखण्डता और स्वतंत्रता को बचाये रखने के उद्देश्य से पुरातनवादी भारतीय सामाजिक व्यवस्था (विशेषकर हिन्दू समाज की मूल संरचना) के मूलभूत पहलुओं को गहन अध्ययन किया और इस सामाजिक व्यवस्था की मूलभूत कमियों को सबके सामने लाने की हिम्मत दिखाई थी तथा इनकी इस हिम्मत के कारण ही आधुनिक भारत देश में मानव को मानव समझने की एक सार्थक कोशिश हुई।

प्रमुख कृतियों (पुस्तकों) में सामाजिक द्रष्य: सामाजिक व्यवस्था के कुछ मूलभूत पहलुओं (एक प्रकार अनछुऐ पहलू) को समाहित हुये बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की कुछ प्रमुख कृतियों का मूलसार निम्नलिखित है –

1) **एनिहिलशन ऑफ कास्ट (जाति का उन्मूलन):** बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की यह एक ऐसी रचना है, जिसमें वह ऐसे भारतीय समाज की कल्पना करते हैं, जिसमें सबको समानता के साथ जीने का अधिकार हो, इसके लिऐ बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर भारतीय सामाजिक व्यवस्था का सदियों से मूल आधार रही जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था पर बड़े ही सटीक तथा सत्यता की कसौटी पर 100: सही उतरने वाले अकाट्य तर्कों के साथ तीव्रतम हमला करते हैं। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर द्वारा भारतीय समाज (हिन्दू समाज) की जन्म आधारित जाति व्यवस्था से संबंधित इन अकाट्य तर्कों का जवाब न तो तथाकथित महात्मा गाँधी के पास था और न ही अन्य किसी समाजशास्त्री अथवा धर्मात्मा के पास था।

भारतीय समाज की जाति व्यवस्था पर लिखी गयी 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' को बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने सन् 1936 ई. में उस समय लिखी थी, जब उन्हें 'जाति–पाँत तोड़क मण्डल' द्वारा लाहौर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण के लिये आमन्त्रित किया गया था,[1] परन्तु जब इस सम्मेलन की आयोजन समिति ने दिसम्बर, 1936 में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर से कहा कि वह अपने इस लिखित भाषण में कुछ सुधार करें।

पुरातनवादी हिन्दू समाज के सभी लोगों में समानता का सिद्धान्त

लागू करने के हिमायती बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने सम्मेलन को आयोजित करने वाली समिति से बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा कि भाषण में परिवर्तन करना तो बहुत दूर की बात है, मैं तो इस भाषण में उपयोग किये गये किसी भी कोमा अथवा विराम (।) में भी बिल्कुल परिवर्तन नहीं कर सकता। उक्त दशा में लाहौर में आयोजित होने वाले इस राष्ट्रीय सम्मेलन के कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया।[2] बाद में इसी भाषण को बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने एनिहिलेशन ऑफ कास्ट के नाम से प्रकाशित कराया था। भारतीय समाज की जाति व्यवस्था से संबंधित विस्फोटक विवरण उपलब्ध कराने वाली बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की यह पुस्तक उच्चवर्णीय हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक ''गीता'' के समान सारगर्वित मानी जाती है।[3] यह पुस्तक उन लोगों के लिये आज भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जो लोग भारत के निवासियों को सभी क्षेत्रों में समानता के साथ जीने का अधिकार देना चाहते हैं। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की इस पुस्तक के महत्व को महात्मा गाँधी ने भी स्वीकार किया था, तभी तो इन्होंने कहा था कि हर हिन्दू को डॉ. अम्बेडकर की इस किताब (एनिहेलेशन ऑफ कास्ट) को पढ़ना चाहिए।[4]

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक में लिखते हैं कि हिन्दू समाज की जाति व्यवस्था एक मात्र धारणा है, जो सदियों से भारतीय समाज में प्रमुख के रूप अपना अस्तित्व बनाये हुये है इसलिए बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने महात्मा गाँधी से बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा था कि हिन्दू समाज की मानवीय आधार पुर्नसंरचना करनी ही चाहिए, जिसमें स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्व (भाईचारा की भावना) के सिद्धांत मौजूद रहे[5] परन्तु इस पर महात्मा गाँधी ने कहा कि 'जाति' आधारित हिन्दू समाज की पुर्नसंरचना कर पाना असंभव है। महात्मा गाँधी के उक्त कथन के पीछे मुख्य कारण यह था कि वह हिन्दू समाज की जाति आधारित सामाजिक व्यवस्था में बिल्कुल भी बदलाव नहीं करना चाहते थे, जबकि बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर हिन्दू समाज की इस रुढ़िवादी जाति व्यवस्था तथा वर्ण व्यवस्था को समूल नष्ट करने के पक्षधर थे क्योंकि वर्ण व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था को समाप्त किये बिना भारतीय समाज में स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्व का सिद्धांत स्थापित हो ही नहीं सकता था।[6] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का यह भी कहना था कि जाति व वर्ण व्यवस्था को शास्त्र सम्मत कदापि नहीं माना जाना चाहिये।[7] इस जाति के संबंध में इनका यह भी कहना था कि निसंदेह जाति हिन्दुओं की सांस है परन्तु हिन्दू सारी हवा को दूषित कर चुके हैं और इस दूषित हवा से सभी (सिक्ख, मुस्लिम, बौद्ध और ईसाई) संक्रमित हैं। इस संबंध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के यह भी कहना था कि हिन्दू समाज के इस प्रथम स्तर (रुढ़िवादी जाति व वर्ण व्यवस्था) में समानता लाये बिना सभी लोगों के आर्थिक तथा राजनैतिक स्तर में सुधार नहीं किया जा सकता।

'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर लिखते हैं कि जाति प्रथा श्रम का विभाजन नहीं है, बल्कि वह श्रमकों का विभाजन है। यह एक ऐसी सीढ़ीबद्ध व्यवस्था है, जिसमें श्रमिकों का विभाजन के अनेक वर्गों में हैं तथा श्रमिकों का यह विभाजन न्याय संगत बिल्कुल नहीं है। यह स्वभाविक प्रवृत्तियों पर भी आधारित नहीं है और तो और यह व्यक्तियों की रूचि–अरूचि, व्यवहारिक सोच पर आधारित है। वस्तुतः यह जाति प्रथा पूर्व कल्पित धारणाओं अथवा मिथकों मनुष्य के जन्म तथा उसके पूर्वजन्म के कार्यों पर आधारित है।[9] अपनी इसी पुस्तक में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर आगे लिखते हैं कि समाज की इस जाति प्रथा में अनेकानेक दोष हैं तथा इस रुढ़िवादी जाति प्रथा के कारण ही आर्थिक कुशलता का विकास सम्भव नहीं हो पाता, इसमें जाति की भी कोई उन्नति नहीं होती। इस जाति प्रथा ने मानव जीवन को पूर्णतः अस्त व्यस्त कर दिया है और इसी जाति प्रथा के कारण हिन्दुओं का नैतिक पतन भी हुआ है, जिसके कारण सभी लागों में सार्वजनिक सेवा भाव भी नहीं आ पाया है। इससे जनता के हित में लोकमत की भावना समाप्त हुयी है। तथाकथित उच्चवर्णीय हिन्दू अपनी जाति वर्ग को ही सर्वोच्च मानता है। ऐसे में वह चाहकर भी इस जाति के घेरे से बाहर नहीं निकल सकता।[10] इस कारण उसकी निष्ठा अपनी जाति तक ही सीमित होती है इसलिए रुढ़िवादी हिन्दुओं की नैतिकता तथा अच्छे व बुरे कार्य की परिभाषा जाति के ऊपर ही निर्भर करती है।[11]

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि जाति प्रथा पर आधारित संगठन सबसे निकृष्ट संगठन है। यह एक ऐसी प्रथा है, जो मनुष्य को संकुचित, आलसी व स्वार्थी बनाती है। वस्तुतः जाति प्रथा एक कपोल कल्पित धारणा है और यह धारणा कुछ स्वार्थी लोगों की मात्र दिमागी उपज ही थी, इसने देश और समाज में विघटन के ही बीज बोये हैं। हिन्दू लोग अपनी रुढ़िवादी धार्मिक कारणों से इस जाति प्रथा का पालन करते हैं क्योंकि हिन्दू धर्म के शास्त्र उन्हें इस जाति प्रथा का कठोरता से पालन करने का देते उपदेश हैं। जाति प्रथा के विनाश के संबंध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि हिन्दुओं को यदि इस जाति प्रथा से निजात पानी है, तो उन्हें अपने धर्मशास्त्रों की पवित्रता को नकारना ही होगा।[12] इसी संदर्भ में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर लिखते हैं कि जाति वेदों व स्मृतियों व धर्म, पूजा–पाठ, यज्ञ और शौच–अशौच के नियमों तक ही सीमित है। किसी भी समाज की बुनियाद लोगों के विवेक पर आधारित होनी चाहिये। जन्म आधारित जाति व्यवस्था पर सभ्य समाज की बुनियाद कदापि खड़ी नहीं की जा सकती, यहाँ विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि महात्मा गाँधी ने बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की एनिहिलेशन ऑफ कास्ट में दिये गये अति विश्व विस्फोटक विचारों को हिन्दू धर्म के लिये एक बड़ी चुनौती माना था।[13]

2) हू वर द शूद्राज (शूद्र कौन थे?): बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर द्वारा लिखी गयी ''हू वर द शूद्राज'' अथवा 'शूद्र' कौन थे? पुस्तक आधुनिक भारत में सामाजिक क्रान्ति की ज्योति जलाने वाले महात्मा ज्योतिबाराव फुले को समर्पित है।[14] सन् 1946 ई. में प्रकाशित इस पुस्तक का आमुख 10 अक्टूबर, 1946 को पूर्ण किया गया था। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की यह पुस्तक प्राचीन भारतीय समाज (इण्डो–आर्यन) के चौथे वर्ण शूद्र की उत्पत्ति, इसका कारण और फिर इस वर्ण के लोगों को अछूत (अपवित्र) बनाने से संबंधित विशुद्ध तथ्यों पर आधारित बड़ा ही सटीक व सागर्वित प्रकाश डालती है। इस पुस्तक के आमुख को पढ़ने से ही पता चल जाता है कि प्राचीन भारतीय समाज का मूल आधार वर्ण व्यवस्था में चौथा वर्ण 'शूद्र' को अस्तित्व में लाने का न कोई वैज्ञानिक आधार न पहले था और न ही अभी है। यह केवल कुछ अत्यन्त चालाक लोगों की दिमाग की उपज थी, जो प्रत्येक दशा में तथाकथित अपने उच्च स्थान को हमेशा

के लिये सुरक्षित करना चाहते थे क्योंकि बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर इस चर्तुवर्णीय व्यवस्था के चार वर्णों (1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य 4. शूद्र) के सिद्धान्त को पूर्णतः अवेज्ञानिक और औचित्यहीन मानते थे। वर्ण व्यवस्था के तहत हुये इस विभाजन के कारण समाज में न केवल असमानता का जन्म हुआ बल्कि चौथे वर्ण के सभी लोगों को अपंगुता और अछूत की श्रेणी में पहुँचा दिया तथा ये शूद्र वर्ण के लोग आर्यों (हिन्दुओं) की इस सामाजिक व्यवस्था के तहत न केवल सबसे निचले पायदान पर ही न पहुँचे, बल्कि इन्हें हिन्दुओं की नजर में सबसे निकम्मे, दीनहीन तथा अपवित्र करने वाले अछूतों के रूप में देखे जाने लगा।[15] अपनी इस पुस्तक में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर इस शूद्र वर्ण के लोगों की संख्या भारत देश की कुल जनसंख्या की 75 से 80: तक होने का उल्लेख करते हैं।[16]

'शूद्र' शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर लिखते हैं कि ब्राह्मणवाद के पोषक शास्त्रों में शूद्र शब्द का पद होना, सम्मानहीन, संस्कृतिहीन तथा असभ्य लोगों से है, जबकि 'शूद्र' अपनी पूर्व अवस्था को खो चुके हैं क्योंकि हिन्दू कानून (शास्त्र) इस तथ्य का स्पष्ट विवरण देते हैं कि शूद्रों का मूलरूप आज की हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के सबसे निचले पायदान (चौथा वर्ण) के शूद्र लोगों के स्वरूप से बिल्कुल अलग था[17] इसलिए बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक में 'शूद्र कौन थे और वह अछूतों की श्रेणी में किस प्रकार पहुँचे? बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का निष्कर्ष यह है–

1. शूद्र सूर्यवंशी थे, जो आर्य समुदाय की सूर्य प्रजाति से संबंधित थे।
2. एक समय था जब इण्डो–आर्यन समाज में केवल तीन ही वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य थे।
3. प्रारंभ में शूद्र का कोई पृथक (अलग) वर्ण था और वह इण्डो–आर्यन समाज में क्षत्रियों के वर्ण में थे।
4. शूद्र राजाओं तथा ब्राह्मणों के बीच अपने–अपने प्रभुत्व को लेकर लगातार युद्ध होते रहते थे तथा कुछ शूद्र राजाओं ने ब्राह्मणों पर अत्याचार किये।[18] इस संदर्भ में हमें नन्द वंश के राजा महापदम नन्द द्वारा अपने राजदरबार में कौटिल्य का अपमान किये जाने का उल्लेख मिलता है।
5. शूद्र राजाओं द्वारा ब्राह्मणों पर किये गये अत्याचार से दुःखी होकर इन ब्राह्मणों ने शूद्र राजाओं का उपनयन संस्कार करना बंद कर दिया था।[19]
6. ब्राह्मणों द्वारा किये जाने वाले उपनयन संस्कार से वंचित होने के कारण इन शूद्र राजाओं (जो पहले क्षत्रियों के सूर्य वंश का प्रजाति संबंधित थे) का सामाजिक स्तर गिर गया और इनकी सामाजिक स्थिति वैश्यों से भी नीचे पहुँच गयी। इस प्रकार इण्डो–आर्यन (भारोपीय) सामाजिक व्यवस्था का चौथा वर्ण शूद्र अपने अस्तित्व में आया।[20]

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर द्वारा इण्डो–आर्यन समाज के चौथे वर्ण 'शूद्र' की उत्पति के सम्बध में निकाले गये निष्कर्ष कुछ लोगों के लिये विवाद का विषय हो सकते है परन्तु इतिहास के विद्वानों तथा गंभीर समाजशास्त्रियों ने इन निष्कर्षों पर अभी तक कोई गम्भीर आपत्ति नहीं की है।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर 'हू वर द शूद्राज' में आगे लिखते हैं कि इण्डो–आर्यन समाज की वर्ण व्यवस्था के कारण आज हिन्दू समाज चार भागों में स्पष्ट रूप से बंट चुका है और इस विभाजन के संबंध में विद्वानजन भी अलग–अलग बयानबाजी करते नजर आते हैं। आर्य समाजी लोग नारा देते है कि वेदों की तरफ लौटो (Retarn To The Vedas) तथा कट्टरपंथी हिन्दू यह कहते नजर आते है कि उन नियमों का विरोध करना चाहिये जो वेंदों में नहीं हैं, साथ ही साथ ये कटटरपंथी हिन्दू तर्क देते हैं कि छुआछूत का कानून वेदों में प्रमाणित नहीं है वैसे भी छुआछूत की भावना कहीं थी भी, तो वह अब दम तोड़ रही है; यद्यपि सत्य यही है कि अभी उसने (छुआछूत व्यवस्था) ने अपना दम तोड़ा नहीं है। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर उक्त विचार को प्रभुत्वशाली हिन्दुओं के दिमाग की राजनैतिक उपज के संज्ञा देते हैं क्योंकि ये प्रभुत्वशाली हिन्दू पहले स्वराज की चाहत रखते हैं और उसके बाद समाज सुधार को प्राथमिकता देते हैं, जबकि शूद्र वर्ण के लोगों के लिए समाज सुधार को प्रथम तथा अपरिहार्य कार्य हैं और बाद में स्वराज प्राप्त करना।[21] यहाँ यह तथ्य विशेष उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश भारत के शासन में इस वर्ण व्यवस्था के केवल उन सिद्धान्तों को ही स्थान मिला था, जो मानवता के लिये तर्कसंगत थे।[22] इण्डो–आर्यन की इस वर्ण व्यवस्था को केवल इनके धर्मशास्त्रों ने ही उचित माना है तथा इस वर्ण व्यवस्था के पालन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया। मूलतः यही कारण है कि समाज को विखण्डित करने वाली इस जाति आधारित वर्ण व्यवस्था का कोई सैद्धान्तिक कानून न होने के बावजूद भी यह आज भी मजबूत अवस्था बनी हुयी है। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक के माध्यम से कहते हैं कि देश व समाज को एकजुट करने के लिये यह आवश्यक हैं कि इण्डो–आर्यन की इस वर्ण व्यवस्था को वेदों तथा धर्मशास्त्रों में प्रतिबंधित करके इसे पूर्ण रूप से अलोकप्रिय बनाया जाये तथा ऐसा होने से हमारा देश पुनः गोरांवित हो सकता है, यद्यपि राजनैतिक दिमाग के उच्चवर्णीय हिन्दू लोग मेरी इस पुस्तक 'हू वर द शूद्राज' को एक उपद्रवी पुस्तक के रूप भी देख सकते है।[23] इस संबंध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर आगे लिखते हैं कि कट्टरपंथी हिन्दू इस पुस्तक (हू वर द शूद्राज) के बारे में क्या सोच रहे होंगे? मैं इसकी अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूँ। वैसे मैं काफी वर्षों से उनके (हिन्दुओं) के साथ लड़ रहा हूँ। मैं (डॉ. अम्बेडकर) केवल यही सोचता हूँ कि दब्बू व अहिंसक दिखने वाले ये हिन्दू अहिंसक उस दशा में कैसे हो सकते हैं, जब उनकी पवित्र पुस्तकों पर हर जगह हमला हो रहा है।[24] मुझे यह अच्छी तरह मालूम है, जब मैं (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर) पिछले वर्ष (1945 ई.) में मद्रास में एक भाषण दे रहा था तथा मेरे भाषण से अनियंत्रित (असन्तुलित) होकर नाराज हिन्दुओं ने पत्रों का एक गुच्छा मुझ पर फैंका था तथा यह सभी पत्र गालियों से पूरे भरे हुये थे। हिन्दुओं की इस सोच के बारे में 'डाक्टर जानसन' ऐतिहासिक सत्यता के साथ लिखते हैं कि हिन्दुओं के धर्मशास्त्रों में उल्लेखित असमानतावादी मतों के कारण उनके देश व समाज का पतन हुआ है[25] लेकिन फिर भी हिन्दुओं की वर्तमान पीढ़ी ने कोई संज्ञान नहीं लिया। इस सबके बाबजूद मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि इन हिन्दुओं की भवष्यि में आने वाली पीढ़ी अपने धर्मशास्त्रों में उल्लेखित असमानतावादी सिद्धान्तों की व्याख्या पर अवश्य सोचेगी। इसी संबंध में कवि 'भवभूत' के शब्दों का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें इस कवि ने कहा था कि समय अनन्त है और पृथ्वी बहुत विशाल है। कुछ दिनों बाद एक व्यक्ति जन्म लेगा, जो प्रशंसा करेगा कि मैंने क्या कहा

था।[26] वस्तुतः जो भी हो, बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की यह पुस्तक ''हू वर द शूद्राज'' हिन्दू रूढ़िवादी विचारधारा के लिये एक गंभीर चुनौती है और आगे भी चुनौती बनी ही रहेगी। वैसे इस किताब की वही लोग तारीफ कर सकते हैं, जो भारत देश के वैदिक काल की रुढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था में सुधार को प्रमुख प्राथमिकता देते हैं।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपने गंभीर शोध के आधार पर हिन्दुओं के इन धर्मशास्त्रों के संबध में 'हू वर द शूद्राज' में स्पष्ट रूप से उल्लेख करते हैं कि इन धर्मशास्त्रों में दिये विवरण पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं किया जा सकता और इसके दो कारण है **प्रथम** मैं एक सच्चा इतिहासकार की परंपरा का अनुशरण नहीं करता हूँ जो सभी साहित्य को औचित्यहीन की श्रेणी में रखता है क्योंकि जो साहित्य में विवरण होता है वह इतिहास लेखन के मापदण्डों के बिल्कुल उलट होता है **दूसरा** धर्मशास्त्रों के प्रति सम्मान व श्रद्धा किसी के आदेश से नहीं दिखायी जा सकती, यह केवल सामाजिक कारकों के प्रति भावनात्मक लगाव के कारण ही हो सकती है। तथाकथित उच्चवर्णीय हिन्दुओं की इन धर्मशास्त्रों के प्रति जो सम्मान व श्रद्धा है, उसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दुओं के यह धर्मशास्त्र ब्राह्मणों को प्रत्येक दशा में सर्वोच्च स्थान प्रदान करते हैं, जबकि गैर ब्राह्मण (विशेषकर शूद्र वर्ण के लोगों) की प्रगति में हिन्दुओं के ये धर्मशास्त्र एक बड़े अवरोध के रूप में ही कार्य करते हैं। इसी संबध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर आगे लिखते हैं कि हिन्दुओं के इन धर्मशास्त्रों में उल्लेखित विवरण के कारण ही गैर ब्राह्मण लोगों (विशेषकर शूद्र वर्ण के लोगों) को अछूत, निकम्मे तथा सम्मानहीन की श्रेणी में रहते हुये नरक का जीवन जीने को मजबूर कर दिया है, जबकि ब्राह्मण लोग सर्वथा अयोग्य होते हुये भी अपनी सर्वोच्च स्थिति बनाये हुये हैं। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर लिखते हैं कि मैं केवल गैर ब्राह्मण ही नहीं हूँ, बल्कि एक अछूत भी हूँ, इसलिए मेरा हिन्दुओं के इन धर्मशास्त्रों के प्रति विरोधी भाव रखना स्वभाविक ही है।[27] प्रो. थ्रोंडीके (Professor Thorndike) लिखते हैं कि एक व्यक्ति जैविक रूप से सोचता है तथा वह समाज के विकास कारण पर सोचता है। मैं ब्राह्मण विद्वानों तथा गैर ब्राह्मण विद्वानों का हिन्दुओं धर्मशास्त्रों के प्रति भावनाओं से परिचित हूँ। ये धर्मशास्त्र मुख्यतः हिन्दुओं के समाजिक इतिहास की समस्याओं से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध कराते है,[28] परन्तु ब्राह्मण विद्वान इन धर्मशास्त्रों में दिये गये गंभीर स्रोत्र सामग्री का ऐतिहासिक अध्ययन करने के स्थान पर अपनी ब्राह्मण जाति के हित में ही इन धर्मशास्त्रों में दिये विवरण को रुढ़िवादी हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के लिये अच्छा मानते हैं,[29] परन्तु गैर ब्राह्मण विद्वानों के शोध करने के क्षेत्र में ब्राह्मण विद्वानों के समान किसी प्रकार का कोई पूर्वाग्रह से प्रेरित विचार अथवा सीमा नहीं होती है तथा वह हमेशा सत्य की खोज में रहता है[30] तथा वह अपने शोध के द्वारा उस तहखाने के द्वार तक पहुँच ही जाता है, जहाँ सत्यता की कसोटी पर खरे उतरने वाले तथ्य छिपे होते हैं। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक में यह भी उल्लेख करते हैं कि अलग–अलग जाति वर्ण की पृष्ठिभूमि से आने वाले क्षेत्रों को किसी क्षेत्र में शोध करने से पूर्व कोई धारणा (मत या विचार) अपने दिमाग में नहीं बनानी चाहिये तथा इस संदर्भ में यह पुस्तक (हू वर द शूद्राज) शोध के क्षेत्र में एक अच्छा उदाहरण[31] है क्योंकि इस पुस्तक को लिखते समय मेरे (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर) दिमाग में केवल विश्व के ऐतिहासिक तत्थों[32] के अलावा कुछ भी नहीं था। यह अच्छी तरह जानते हैं कि देश में गैर ब्राह्मण आंदोलन हुये और शूद्रों भलाई के लिये राजनैतिक आन्दोलन भी चले, जिनमें मैं (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर) भी शामिल था। यहाँ पर मै बिल्कुल निश्चित हूँ कि पाठक इस पुस्तक (हू वर द शूद्राज) को गैर ब्राह्मण राजनीति के रूप में नहीं देखेंगे। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक के आमुख को समाप्ति के तरफ पहुँचाते हुये महाभारत के 12 वे अध्याय शान्ति पर्व में दिये विवरण के संबंध में लिखते हैं क्योंकि इसमें पैजवना (PAIJAVANA) का एक शूद्र के रूप उल्लेख हुआ है। यदि महाभारत के यह महापुरूष (व्यास वैश्यापयन, सुता तथा लोमा तथा हर्षा अथवा भ्रम पैजवना) का उल्लेख नहीं करते, तो हमे शूद्रों की उत्पत्ति का यह प्रथम साक्ष्य[33] प्राप्त नहीं हो पाता। वस्तुतः बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के लिए शूद्रों के सम्बध में लिखी गयी यह पुस्तक आज भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो शूद्रों की उत्पत्ति व उनके हिन्दू समाज की वर्ण व्यवस्था के चौथे वर्ण में पहुँचने और फिर उन्हें अछूत बना देने से संबन्धित इतिहास–परक जानकारी उपलब्ध कराती है।

3. द अनटचेबिलसः हू वर दे एण्ड ह्वाई दे बिकेम अनटचेबिलसः बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की यह पुस्तक कुल 6 भाग तथा 16 अध्यायों में विभाजित है और इस पुस्तक का प्रकाशन अक्टूबर, 1948 को ठक्कर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, बम्बई[34] प्रकाशन द्वारा किया गया था। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की यह पुस्तक 'हू वर द शूद्राज' पुस्तक की पूरक है। अपनी इस शोधात्मक पुस्तक में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने इन तथ्यों पर सारगर्वित प्रकाश डाला हैं कि देश में अस्प्रश्यता (छुआछूत) की उत्पत्ति क्यों और कैसे हुयी। अपनी इस पुस्तक में अस्पृश्यों (अछूत लोगों) की संख्या पचास मिलियन होने का उल्लेख करते हैं। अपनी इस पुस्तक को लिखते समय बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर इस तथ्य पर बहुत दुःख व्यक्त करते हैं कि आज तक किसी भी ब्राह्मण विद्वान ने अस्पृश्यता की उत्पत्ति पर किसी भी प्रकार का गहन अध्ययन नहीं किया है,[35] जबकि आज सभी प्रकार आर्थिक मदद (छात्रवृत्ति) पठन–पाठन के लिये इन ब्राह्मणों को ही दी जाती है, परन्तु इस आर्थिक मदद के बावजूद भी कोई भी ब्राह्मण **'वाल्टेयर'**[36] की तरह नहीं बन सका। यह वही 'वाल्टेयर' था, जिसने कैथोलिक चर्च के गलत सिद्धान्तों के खिलाफ एक बड़े बुद्धिजीवी वर्ग को मजबूती के साथ ला खड़ा किया।[37] यहाँ पर हमारे देश के लिये यह बहुत ही गम्भीर विचारणीय प्रश्न है कि देश की समस्त छात्रवृत्ति केवल ब्राह्मणों के लिये सुरक्षित होने के बावजूद भी वह (समस्त ब्राह्मण) एक भी 'वाल्टेयर' क्यों नहीं उत्पन्न कर पाये। देश के समस्त ब्राह्मणों में एक भी वाल्टेयर न होने के प्रश्न का उत्तर बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर एक दूसरा प्रश्न भी खोज लेते हैं और इसी संदर्भ में वह आगे लिखते हैं कि तुर्की का सुल्तान संसार के मुस्लिमों का इस्लाम धर्म क्यों नष्ट नहीं करना चाहता? पादरी कैथोलिकवाद का सार्वजनिक से विरोध क्यों नहीं करता? इसी प्रकार ब्रिटेन (इंगलैण्ड) की संसद समस्त नीली आखों वाले बच्चों को मरने से रोकने के लिये कानून क्यों नहीं बनाती? इसका मतलब बिल्कुल साफ है कि जिस प्रकार तुर्की का सुल्तान, कैथोलिक चर्च और ब्रिटेन की संसद के अपने–अपने उपरोक्त प्रश्नों के संदर्भ में एक बड़ी समानता है, उसी प्रकार ब्राह्मणों द्वारा अभी तक एक भी बाल्टेयर देश में उत्पन्न न कर पाने में भी समानता है[38] इस सबके पीछे समस्त ब्राह्मणों का केवल निजी स्वार्थ39 ही सर्वोपरि होता है और इसी निजी स्वार्थ व

चालाकी से वह भारतीय समाज में अपनी सर्वोच्चता बनाये रखने में सफल भी रहे हैं, उन्होंने अपनी ताकत व स्थान को अडिग बनाये रखने के लिए भारतीय संस्कृति के नियम कानून व परंपराओं को कपोल कल्पित धारणाओं के साहरे इस प्रकार स्थापित किया कि तथाकथित छोटी जाति के लोग उनके (ब्राह्मणों) के इर्द–गिर्द भी न पहुँच पायें। वस्तुतः यही कारण था कि देश की समस्त छात्रवृति ब्राह्मणों के लिए सुरक्षित होने के बावजूद भी वह भारत देश में एक भी वाल्टेयर उत्पन्न नहीं कर पाये।[40] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर इसी संदर्भ में आगे लिखते हैं कि यदि हमारे देश में वाल्टेयर जैसा बुद्धिमान तथा क्रांतिकारी व्यक्ति उत्पन्न हो भी जाता, तो ये ब्राह्मण उसका किस प्रकार सामना करते? क्योंकि कट्टरपंथी हिन्दू (विशेषकर ब्राह्मण) हमेशा यही सोचते हैं। समाज में छुआछूत (अस्प्रश्यता) कोई गलत चीज है ही नहीं।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने अपनी इस पुस्तक में अस्प्रश्यता से संबधित प्रत्येक पहलू (पक्ष) को अन्यन्त गंभीरता से लिपिबद्ध किया है तथा कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को सभी के सामने रखे हैं –

1. अछूत (अस्प्रश्य) लोग गाँव की सीमा के बाहर क्यों रहते हैं?
2. गाय का मांस खाने से अस्प्रश्यता का जन्म कैसे हुआ?
3. क्या हिन्दू (विशेषकर ब्राह्मण) गाय के मांस का सेवन नहीं करते थे?[41]
4. ब्राह्मणेत्तर जातियों ने गाय के मांस खाना क्यों छोड दिया था?
5. ब्राह्मण किस प्रकार शाकाहारी बन गये?[42]

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने अपनी इस पुस्तक में अस्प्रश्यता (छुआछूत) के संबंध में जो महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले वे इस प्रकार है –

1. प्रारम्भ में अस्प्रश्य (अछूत) व हिन्दूओं के बीच कोई भी अन्तर नहीं था।
2. भारत में समय –समय पर दूसरे देशों के कबीले आते रहे। यहाँ आने वाले कबीलों में से कुछ लोग अलग होकर भारत में रहने वाले कबीलों के साथ समाहित हो गये और जो भारतीय कबीले इन विदेशी कबीलों में समाहित नहीं हो पाये, उन्हें बाद में अस्प्रश्य (अछूत) समझे जाने लगा।
3. जिस प्रकार अस्प्रश्यता जन्म आधारित नहीं है, उसी प्रकार वह व्यवस्था पर भी आधारित नहीं है।
4. अस्प्रश्यता (छुआछूत) की उत्पत्ति के मुख्य दो कारण हैं–
    - अस्प्रश्यता का प्रथम स्रोत्र यह है कि भारत में रहने वाले मूल कबीलों के लोग विदेशों से आये हुये उन कबीलों के लोगों से घ्रणा करते थे, जिन्होंने यहाँ के कबीलों के साथ संबंध[43] स्थापित किया था।
    - अस्पृश्यता की उत्पत्ति का दूसरा कारण यह है कि विदेशी कबीलों से अलग रहे लोगों ने गाय के मांस खाना बन्द नहीं किया था, यद्यपि भारतीय मूल के कबीलों के लिए गाय का मांस खाना एक पाप नहीं था तथा जो लोग गाय का मांस खाते थे, वह इन लोगों की नजर में नीच व पापी था। बाद में अस्पृश्य कहलाए।
5. अस्पृश्यता (छुआछूत) की उत्पत्ति पर विचार करते समय अस्पृश्यों (अछूत लोग) व अपवित्र लोगों के अन्तर को ध्यान में रखना चाहिए। कट्टरपंथी हिन्दू (विशेष ब्राह्मण) लेखकों ने सभी अपवित्र लोगों को अस्पृश्य (अछूत) माना है।44 बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के विचार से यह उनकी मुख्य भूल है क्योंकि अछूत (अस्पृश्य) लोग अपवित्र लोगों से अलग होते हैं।
6. एक वर्ग के रूप में अपवित्र लोगों की उत्पत्ति हिन्दुओं के धर्मशास्त्रों में दिये गये कपोल कल्पित धारणाओं से से हुयी जबकि अस्पृश्य लोगों की उत्पत्ति का समय लगभग 400 ई. था।

अस्पृश्यता (छुआछूत) की उत्पत्ति से संबन्धित बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर द्वारा खोजे गये इन निष्कर्षों के परिणाम ऐतिहासिक शोध के क्षेत्र में अग्रणी योगदान दे सकते हैं तथा इस दौरान गंभीर इतिहासकारों को अपना कार्य पूर्ण ईमानदारी के साथ करना होगा अर्थात एक सच्चा इतिहासकार को किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले स्वयं को गोइथे (ळवमजीम) के मानकों पर परिभाषित करना होगा। इतिहासकारों के संबंध में इस विद्वान का कहना था–

''एक इतिहासकार का कार्य असत्य में से सत्य खोजना तथा असंदिग्ध से संदिग्ध को अलग करना होना चाहिये क्योंकि असत्य (संदिग्ध) सिद्धान्त अथवा धारणाऐं हमेशा अस्वीकार होती हैं। प्रत्येक खोजकर्ता को एक न्यायधीश के रूप में रखकर ही अपने कार्य को अंजाम देना चाहिये तथा किसी अंजाम पर पहुँचने से पहले वह किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले संबंधित साक्ष्यों का बहुत ही सूक्ष्मता के साथ विश्लेषण करे और फिर अपने निष्कर्ष दे कि उसका मत (राय, सिद्धान्त और फैसला) न्यायधीश के समान है या नहीं।''[45]

''द अनटचेबिलस' हू वर दे एण्ड हवाई दे बिकेम अनटचेबिलस'' को लिखते समय बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर को भी काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था जैसा कि वह लिखते हैं कि अस्पृश्यता से संबंधित बहुत सी कढ़ियाँ गायब थी,[46] यद्यपि अपने कार्य को अंजाम देते समय इन मुश्किलों को सामना करने वाला मैं (डॉ. अम्बेडकर) अकेला नहीं हूँ क्योंकि प्राचीन भारतीय इतिहास के सभी छात्रों को अपने काम को करते समय गंभीर परेशानियों (मुश्किलों) का सामना करना ही पड़ता है।[47] अंग्रेज इतिहासकार माउण्ट स्टुअर्ट एल्फिंस्टन ने भी प्राचीन भारतीय इतिहास को साक्ष्यविहीन माना है क्योंकि भारत के इतिहास में सिकन्दर महान के आक्रमण (326 ई.पू.) से पहले ऐसा कोई सटीक साक्ष्य नहीं मिलता जो सार्वजनिक घटना से संबंधित सही व सटीक विवरण देता हो तथा ऐसी दशा में प्राचीन भारतीय इतिहास के क्षेत्रों को अनुमान तथा सहज बुद्धि (तर्क शक्ति लगाये बिना ही तुरन्त समझने की शक्ति) का साहारा लेना ही पड़ता है और ये अनुमान तथा सहज बुद्धि गायब साक्ष्यों को खोजने के बीच में एक पुल (Bridge)[48] का कार्य करते हैं। मेरे (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर) सोच के अनुसार प्राचीन भारतीय इतिहास (विशेषकर 326 ई.पू. का इतिहास) से संबंधित शोध करते समय अनुमानों तथा सहज बुद्धि का साहारा लेना अनुचित नहीं होगा।

भारत में अस्पृश्यता की उत्पत्ति के संबंध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का मानना है कि अस्पृश्यता की उत्पत्ति से संबंधित कोई भी सटीक कार्य अभी तक नहीं हुआ है और इसलिये केवल झूठी धारणाएँ गढ़कर बहुसंख्यक भारतीय लोगों को गुमराह करते हुये अस्पृश्यता को हिन्दुओं के धर्मशास्त्रों के अनुरूप सही ठहराने का प्रयास ही

किया जाता रहा है कि अस्पृश्य जाति में जन्म लेना केवल पूर्वजन्म में किये गये कार्यों का ही परिणाम है तथा कट्टरपंथी हिन्दू (विशेषकर ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य लोग) अस्पृश्यता को शास्त्रसंमत बताकर अपनी सर्वोच्चता को हमेशा के लिए बनाये रखने का भरकस प्रयास करते हैं।[49]

वस्तुतः 'द अनटचेबिलस' हू वर दे एण्ड ह्वाई दे बिकेम अनटचेबिल्स बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें अस्पृश्यता की उत्पत्ति से संबंधित दिये गये सिद्धान्त आज भी उतने ही प्रासांगिक हैं जितने कि पहले थे।

4) **ह्वाट कांग्रेस एण्ड गांधी हेव डन टू दः** अनटचेबिलस बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 1945 ई. में हुआ। इस पुस्तक के अध्ययन से हमें बड़ी आसानी से यह मालूम हो जाता है कि कांग्रेस और महात्मा गाँधी ने अस्पृश्य लोगों के सामाजिक स्तर को सुधारने के लिये जमीनी स्तर पर क्या कार्य किये? बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने अपनी इस पुस्तक माध्यम से कांग्रेस तथा महात्मा गाँधी की कठोर आलोचना करते हुये बड़े ही तार्किक साक्ष्यों के साथ विवरण दिया है कि महात्मा गाँधी और उनकी कांग्रेस पार्टी ने जमीनी स्तर पर अस्पृश्य लोगों के सामाजिक स्तर ऊँचा उठाने के लिये केवल झूठे आश्वासनों के अलावा कुछ भी नहीं किया। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक में कांग्रेस और महात्मा गाँधी के संबंध में बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि इतिहास गवाह (साक्षी) है कि आप जैसे कितने महात्मा आये और चले गये,[50] लेकिन अस्पृश्य, अस्पृश्य ही रहा। अतीत काल में आप जैसे महात्माओं ने तेज आंध ी की तरह केवल धूल ही उड़ाई है[51] क्योंकि उनके द्वारा परस्पर भेदभाव वाले कानूनों में सामानता नहीं ला जा सकी, जबकि इन महात्माओं का एकमात्र उद्देश्य अस्पृश्यता निवारण व दलितों की स्थिति को प्रगतिशील बनाना ही था।[52] जब महात्मा गाँधी ने कांग्रेस व स्वयं के द्वारा अस्पृश्यों के लिये किये गये कार्यों के संबंध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर से कहा कि मैं (महात्मा गाँधी) अस्प्रश्य समाज की समस्याओं को दूर करने के लिए तब से कार्य कर रहा हूँ, जब मैं पढ़ता था और तब तुम (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर) पैदा भी नहीं हुये थे।[53] महात्मा गाँधी इस बढ़बोले (शेखी मारना) का उत्तर बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने बड़े सटीक अंदाज में दिया कि यह सत्य है कि महात्मा जी कि आपने मेरे जन्म से पहले ही अस्पृश्यों की समस्याओं पर कार्य करना आरंभ कर दिया था। वृद्ध (बूढ़े) लोग हमेशा ही अपनी आयु को बीच में ले आते हैं परन्तु यह भी सत्य है कि आपकी वजह ही कांग्रेस पार्टी ने इन समस्याओं को औपचारिक मान्यता देने के अलावा किया ही क्या है?[54] आप कह सकते हैं कि कांग्रेस ने अस्प्रश्य वर्ग के सामाजिक स्तर को उठाने के लिये 25 लाख रूपये खर्च किये, परन्तु यह सब बेकार (व्यर्थ) है। मै बहुत कम आर्थिक साहयता से ही अपने लोगों का दृष्टिकोण व आर्थिक दशा को बदल सकता हूँ।[55] मै कहता हूँ कि कांग्रेस इस क्षेत्र में बिल्कुल ईमानदार नहीं रही। अगर वह जरा सी भी ईमानदर होती, तो वह निश्चय ही वैसे ही कदम उठाती जैसा कि कांग्रेसियों के लिए खद्दर (सूती कपड़ा) पहनना अनिवार्य किया है तथा कांग्रेस यदि ऐसा करती, तो अस्पृश्यों का कुछ उत्थान होता।[56] कोई भी कांग्रेसी ऐसा नहीं है, जिसने अस्पृश्य स्त्री–पूरुष को अपने यहाँ नौकरी दी हो[57] और किसी ने अस्प्रश्य छात्र के साथ एक सप्ताह व एक दिन खाना खाया हो।[58]

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर आगे उल्लेख करते हैं कि कांग्रेस जितनी सत्ता की भूखी है, उतनी अपने उद्देश्य व सिद्धान्तों के कार्यों को साकार करने के लिये नहीं है। हम स्वयं के आत्म सम्मान में विश्वास करते हैं। हम किसी महान नेता या महात्मा के कार्यों में विश्वास रखने के लिये कदापि तैयार नहीं हैं।[59] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने महात्मा गाँधी व जवाहर लाल नेहरू जैसे कांग्रेसी नेताओं द्वारा अस्पृश्य लोगों के लिये अपनायी गयी नीति के सम्बन्ध में कहा कि महात्मा गाँधी तथा जवाहर लाल नेहरू द्वारा अस्प्रश्यों के लिए अपनायी गयी नीति अस्प्रश्यों की भलाई की पोषक नहीं है।[60]

भारत देश के इन अस्प्रश्यों लोगों का शुभ चिन्तक बनने की कोशिश में महात्मा गाँधी व अन्य कांग्रेसी नेताओं ने यह अफवाह बहुत तेजी से फैलायी कि वह (महात्मा गाँधी) तथा कांग्रेस पार्टी ही अस्पृश्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र संस्था हैं और इसके लिये इन्होंने 1937 ई. में हुये आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी को प्राप्त हुयी सीटों के आकडों को बहुत ही चालाकी पूर्ण (गलत ढंग से) समाचार पत्रों व लोगों के सामने पेश किये गये। इन गलत आकड़ों को सबके सामने पेश करने के क्रम महात्मा गाँधी व अन्य कांग्रेसी नेताओं ने दलील दी कि अस्पृश्यों के लिये सुरक्षित 151 सीटों में से बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की स्वतन्त्र पार्टी को मात्र 11 ही सीटे मिली हैं, जबकि यहाँ पर उल्लेखनीय तथ्य यह है कि कांग्रेस के महात्मा गाँधी जैसे चालाक नेताओं ने समाचार पत्रों व देश के लोगों के सामने ये आकड़े पेश नहीं किये कि 1937 ई. में हुये आम चुनाव में कांग्रेस पार्टी को अस्पृश्यों के लिए सुरक्षित 151 सीटों में से कितनी सीटों पर विजय प्राप्त हुयी। महात्मा गाँधी व अन्य कांग्रेसी नेताओं द्वारा कांग्रेस पार्टी के संबंध में पेश किये गये उन झूठे आकडों (1937 ई. के चुनाव में अस्प्रश्यों के लिये सुरक्षित 151 सीटो में से कांग्रेस पार्टी को प्राप्त सीटों का स्पष्ट विवरण न देना) का बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर निम्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं से रेखांकित करते हुए महात्मा गाँधी तथा उनकी कांग्रेस पार्टी के नापाक इरादों को उजागर किया–

- मैं बिल्कुल निश्चित हूँ कि 1937 ई. में हुये आम चुनाव में अस्प्रश्यों के लिये सुरक्षित सीटों को कांग्रेस पार्टी द्वारा जीतने संबंध में किये गये उसके दुष्प्रचार के जवाब में मेरी यह पुस्तक कांग्रेस पार्टी के ताबूत में आखिरी कील साबित होगी।61
- अस्पृश्यों के लिये सुरक्षित 151 सीटों में से कांग्रेस पार्टी का मात्र 78 सीटें ही प्राप्त हुयी हैं।
- अस्पृश्यों ने लगभग प्रत्येक सीट पर कांग्रेस पार्टी के खिलाफ अपने उम्मीदवार लड़ाये थे।
- कांग्रेस पार्टी ने सवर्ण हिन्दुओं के वोटों के साहरे (समर्थन) से ही 78 सीटें जीती हैं और इस दशा में वह कांग्रेस पार्टी अनुसूचित जातियों का प्रतिनिधित्व बिल्कुल भी नहीं करती।
- कांग्रेस पार्टी ने केवल 38 सीटे ही अनुसूचित जाति के वोट से जीती हैं।[62]
- स्वतंत्र श्रमिक पार्टी का गठन 1937 के आम चुनाव से कुछ महीने पहले ही हुआ था तथा यह पार्टी केवल बम्बई प्रान्त में ही सक्रिय थी।[63] दूसरे प्रान्तों में इस पार्टी (स्वतन्त्र श्रमिक पार्टी) की शखाऐं अथवा कार्यालय स्थापित करने के लिए समय नहीं

था तथा इसलिये स्वतन्त्र श्रमिक पार्टी केवल बम्बई प्रान्त में ही चुनाव लड़ा था। कम समय तथा समुचित तैयारी न होने के कारण स्वतन्त्र पार्टी को बहुत बड़ी सफलता इस चुनाव में नहीं मिल सकी। ऐसे में स्वतन्त्र श्रमिक पार्टी अस्पृश्यों के लिये 13 सीटें ही जीत सकी इसके अलावा इस स्वतन्त्र श्रमिक पार्टी को 2 सामान्य सीटों पर भी विजय प्राप्त हुयी थी।[64]

यहाँ पर बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर यह स्पष्ट करते हैं कि मेरे (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर) द्वारा दिये गये उक्त विवरण से कांग्रेस पार्टी के इस झूठे दुष्प्रचार को निश्चित ही करारा (मुहतोड़) जबाब मिल जायेगा कि अस्प्रश्यों के लिये सुरक्षित सभी सीटे पर कांग्रेस पार्टी ने भारी विजय प्राप्त की, जबकि स्वतन्त्र श्रमिक पार्टी को इस चुनाव में बहुत बुरी पराजय मिली है। ऐसे में यह पुस्तक उन विद्वानों तथा राजनीतिज्ञों के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगी, जो इस विषय (कांग्रेस पार्टी की सफलता का दुष्प्रचार को उजागर करने) में गहरी दिलचस्पी रखते हैं तथा सत्य जानने के के लिए लालायित हैं।[65]

वस्तुतः बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की इस पुस्तक की विवेचना बहुत ही साधारण तथा तथ्यपरक है। अपनी इस पुस्तक को लिखने के कारण को स्पष्ट करते हुये बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर उल्लेख करते हैं कि इस पुस्तक के द्वारा कांग्रेस तथा महात्मा गाँधी के इस दुष्प्रचार को उजागर करना है कि कांग्रेस तथा महात्मा गाँधी ही अस्पृश्यों की एकमात्र शुभ चिन्तक हैं क्योंकि कांग्रेस तथा महात्मा गाँधी ने अस्पृश्यों व विदेशियों के बीच गलत विवरण पेश करके यह धारणा बना दी थी कि वही (कांग्रेस व महात्मा गाँधी) अस्प्रश्यों के एकमात्र प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था व अध्यक्ष है।[66] इस पुस्तक के 75 पृष्ठों में केवल कांग्रेस पार्टी व महात्मा गाँधी को अस्पृश्यों से सम्बन्धित विवरण दिया गया है और यह विवरण सन् 1917 ई. से प्रारम्भ होता है। यह वही समय था, जब कांग्रेस तथा महात्मा गाँधी अस्पृश्यों की समस्याओं से परिचित हुये, परन्तु यह सभी जानते हैं कि इन्होंने (कांग्रेस व महात्मा गाँधी) अस्प्रश्यों के लिये क्या किया? यह दोनों ही अस्पृश्यों की समस्याओं के समाधान करने से अधिक स्वराज प्राप्त करना तथा अहिंसा के सिद्धान्त के घोर समर्थक होने के अलावा कुछ नहीं दिखायी दिये हैं।[67] लन्दन में हुये गोलमेज सम्मेलन में भी महात्मा गाँधी ने कांग्रेस के भारत के अस्पृश्यों का एकमात्र प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था होने का झूठा दावा किया था परन्तु इस सम्मेलन में मेरे (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर) द्वारा कांग्रेस तथा महात्मा गाँधी ने इस झूठे दावा का पुरजोर विराध करने के कारण ही ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने कांग्रेस व महात्मा गाँधी के अस्पृश्यों के संबंध में किये गये झूठे दावे को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया था।[68]

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर आगे लिखते हैं कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री का उक्त निर्णय बिल्कुल सही था और इसलिए उन्होंने अस्पृश्यों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था की घोषणा की थी, इस पृथक निर्वाचन व्यवस्था के तहत अस्पृश्यों के लिए कुछ स्थान (सीटें) सुरक्षित किये गये थे। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर महात्मा गाँधी तथा कांग्रेस के सम्बन्ध में आगे लिखते हैं कि जब लोग गाँधी तथा कांग्रेस के अस्पृश्यों के संबंध में वास्तविक कारनामें जानेगें तब अस्पृश्य लोग गाँधी तथा कांग्रेस से स्वतः ही घ्रणा करने लगेगें। मैं निश्चित हूँ कि इस पुस्तक के संबंध में हिन्दुओं की प्रतिक्रिया क्या होगी। सामान्यतः वे (हिन्दू लोग) सार्वजनिक रूप से इस पुस्तक की निंदा करेंगे तथा मेरा बार–बार नाम लेंगे परन्तु जैसा कि एक कहावत (लोकोक्ति) है ''जब कारवाँ गुजरता है तो कुत्ते भौंकते है।''[69] मैंने अपनी पूर्ण जिम्मेदारी निभायी है, इससे ज्यादा मैंने कुछ नहीं किया है। जैसा कि 'वाल्टेयर' मानता है कि जो अपने समय का इतिहास लिखता है, उसे अपने ऊपर होने वाले आक्रमणों के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिये। जो स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व की सच्चाई से प्यार करता हो, उसे थोड़ी सी असुविधा से हतोत्साहित नहीं होना चाहिये।[70]

अति संक्षेप में 'ह्वाट कांग्रेस एण्ड गाँधी हैव डन टू द अनटेचेबिलस' अध्याय 29 से हमें यह बखूबी पता चलता है कि कांग्रेस पार्टी और महात्मा गाँधी ने देश के अस्प्रश्यों के लिये जमीनी स्तर पर वास्तव में क्या किया? कांग्रेस पार्टी व महात्मा गाँधी द्वारा अस्प्रश्यों के संबंध में किये गये दावों में कितनी सत्यता थी? कांग्रेस पार्टी व महात्मा गाँधी द्वारा अस्प्रश्यों के हित में किये गये बड़े–बड़े दावों को प्रथम दृष्टि में ही बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने पूर्णतः क्यों खारिज कर दिया था? क्योंकि गाँधी से कांग्रेस द्वारा अस्पृश्यों की समस्याओं के निवारण के लिए किये गये कार्य केवल दिखावा ही थे।

निष्कर्षः वस्तुतः भारतीय समाज की जाति प्रथा पर आधारित संगठन सबसे निकृष्ट संगठन है। यह एक ऐसी प्रथा है, जो मनुष्य को संकुचित, आलसी व स्वार्थी बनाती है। वस्तुतः जाति प्रथा एक कपोल कल्पित धारणा है और यह धारणा कुछ स्वार्थी लोगों की मात्र दिमागी उपज ही थी, इसने देश और समाज में विघटन के ही बीज बोये हैं। हिन्दू लोग अपनी रुढ़िवादी धार्मिक कारणों से इस जाति प्रथा का पालन करते हैं क्योंकि हिन्दू धर्म के शास्त्र उन्हें इस जाति प्रथा का कठोरता से पालन करने का देते उपदेश हैं। जाति प्रथा के विनाश के संबंध में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि हिन्दुओं को यदि इस जाति प्रथा से निजात पानी है, तो उन्हें अपने धर्मशास्त्रों की पवित्रता को नकारना ही होगा। किसी भी समाज की बुनियाद लोगों के विवेक पर आधारित होनी चाहिये। जन्म आधारित जाति व्यवस्था पर सभ्य समाज की बुनियाद कदापि खड़ी नहीं की जा सकती। हिन्दू समाज की मानवीय आधार पुर्नसंरचना करनी ही चाहिए, जिसमें स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्व (भाईचारा की भावना) के सिद्धांत मौजूद रहे।

संदर्भ ग्रंथ

1. पूरनमलः दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2002, पृष्ठ 163
2. वसंतमूनः बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, वसंत कुंज, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ 108
3. वही
4. अम्बेडकर, डॉ. बी. आरः एनिहिलेशन ऑफ कास्ट विद ए रेप्लाई टू महात्मा गाँधी, भीम पत्रिका पब्लिकेशंस, जालंधर, पंजाब, 1987 पृष्ठ 144
5. वही
6. वही
7. वही

8. वही, पृष्ठ 122
9. पूरनमलः दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय, अविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2002, पृष्ठ 163
10. वही
11. वही
12. वही
13. वही
14. इस पुस्तक को महात्मा ज्योतिवा राव फुले को समर्पित करते हुये बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने महात्मा ज्योतिव राव फुले को आधुनिक भारत सबसे महान शूद्र कहा था। यह वही फुले थे, जिन्होंने विदेशी शासन से आजादी पाने की अपेक्षा देश में सामाजिक लोकतन्त्र की स्थापना तथा बहुजन समाज की महिलाओं को शिक्षित करने के कार्य को सर्वोपरि महत्व दिया था। (पूरणमलः दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2002, पृष्ठ 161)
15. अम्बेडकर, डॉ. बी. आर. : हू वर द शूद्राज? हाऊ दे केम टू बी द फोर्थ वर्णा इन इण्डों–आर्यन सोसायटी, ठक्कर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, बम्बई, 1948, पृष्ठ 1
16. वही, पृष्ठ, 2
17. वही, पृष्ठ, 3
18. वही, पृष्ठ, 4
19. वही, पृष्ठ, 5
20. वही
21. वही
22. अम्बेडकर, डॉ. बी. आर. : हू वर द शूद्राज? हाऊ दे केम टू बी द फोर्थ वर्णा इन इण्डों–आर्यन सोसायटी, ठक्कर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, बम्बई, 1948, पृष्ठ 1
23. वही
24. अहीर, डी. स : डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राइटिंगस एण्ड स्पीचेस, बी. आर. पब्लिशिंग कापरेशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ, 173
25. वही, पृष्ठ, 174
26. वही, पृष्ठ, 175
27. वही
28. अम्बेडकर, डॉ. बी. आर.: हू वर द शूद्राज, रिप्रिंट, दिल्ली, 1947, पृष्ठ 6
29. वही
30. वही, पृष्ठ, 7
31. वही, पृष्ठ, 8
32. वही, पृष्ठ, 8
33. अम्बेडकर, डॉ. बी. आर.: हू वर द शूद्राज, रिप्रिंट, दिल्ली, 1947, पृष्ठ, 9
34. वही
35. अहीर, डी. सीः डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राइटिंगस एण्ड स्पीचेस, बी. आर. पब्लिशिंग कोपरेशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 191
36. पूरनमलः दलित आन्दोलन और अम्बेडकर, अविष्कार पब्लिशर्स, डिस्टीब्यूटर्स, जयपुर, 2002, पृष्ठ 162
37. अम्बेडकर, डॉ. बी. आरः द अनटचेबिल्स : हू वर दे एण्ड ह्वाय दे बिकेम अनटचेबिलस, ठक्कर एण्ड कम्पनी लिमिडेट, बम्बई, अक्टूबर, 1960, पृष्ठ 3
38. वही
39. अम्बेडकर, डॉ. बी. आरः द अनटचेबिल्स : हू वर दे एण्ड ह्वाय दे बिकेम अनटचेबिलस, ठक्कर एण्ड कम्पनी लिमिडेट, बम्बई अक्टूबर, 1948, पृष्ठ 3
40. वही
41. वही
42. वही, पृष्ठ, 3
43. वही
44. वही, पृष्ठ, 4
45. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर अपनी इस पुस्तक 'द अनटचेबिलस' में अस्पृश्य लोगों (अपवित्र लोगों) को अलग–अलग श्रेणी में रखते हैं। (अम्बेडकर, डॉ. बी. आर.: द अनटचेबिलसः हू वर दे एण्ड ह्वाय दे बिकेम अनटचेबिलस, ठक्कर एण्ड कम्पनी लिमिडेट, बम्बई, 1948, पृष्ठ 4)
46. अहीर, डी.सी.: डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर, राइटिंगस एण्ड स्पीचेस, बी. आर. पब्लिशिंग कापरेशन, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 187
47. अम्बेडकर, डॉ. बी. आर.: द अनटचेबिल्सः हू वर दे एण्ड ह्वाय दे बिकेम अनटचेबिलस, ठक्कर एण्ड कम्पनी लिमिडेट, बम्बई, 1948, पृष्ठ 7
48. वही
49. वही
50. वही
51. वही, पृष्ठ 71
52. वही
53. वही
54. वही, पृष्ठ 95
55. वही
56. डॉ. पूरनमलः दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय, अविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स,जयपुर,2002, पृष्ठ 95
57. वही
58. वही
59. वही
60. वही, पृष्ठ 95
61. वही, पृष्ठ, 96
62. अम्बेडकर, डॉ. बी. आरः ह्वाट कांग्रेस एण्ड गाँधी हेव डन टू द अनटचेबिलस,रिप्रिन्टबम्बई, 1945, पृष्ठ 3
63. वही
64. वही
65. वही
66. अहीर, डी. सी.: डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राइटिंग्स एण्ड स्पीचेस, बी. आर. पब्लिशिंग कापरेशन, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 286
67. वही, पृष्ठ, 273
68. वही
69. अहीर, डी. सी.: डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राइटिंग्स एण्ड स्पीचेस, बी. आर. पब्लिशिंग कापरेशन, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 273
70. वही।